नवरात्रि का आध्यात्मिक मर्म

नवरात्रि दो शब्दों को जोड़ कर बना है: नव् व रात्रि। नव अर्थात नया या नवीन एवं रात्रि अर्थात् रात या अंधियारा। ज्ञान रूपी सूर्य से अज्ञानता रूपी अंधियारे तथा आसुरी प्रवृत्तियों से युक्त तमोगुणी रात्रि का जब त्रिदेव से प्रगटी आदि शक्ति ने अंत किया तो सभी ने इन शिव शक्तियों का अष्ट भुजाधारी कन्याओं के रूप में पूजन - वंदन किया। तभी से नवरात्रि पर्व मनाना शुरू हुआ। इसलिए हर वर्ष हम भारतवासी नई रात्रि का स्वागत करने हेतु अखण्ड नव ज्योति जलाकर दुर्गा,काली, जगदम्बा सरस्वती, लक्ष्मी आदि से हमारे अंदर व्याप्त अज्ञान रूपी अंधकार को मिटाकर अंतर-ज्योति जलाने की प्रार्थना करते हैं। इसलिए गाते भी हैं ''ज्योत जगाने आये हैं'', कष्ट मिटा दे, हे माँ अष्ट भवानी''। वास्तव में ज्ञान द्वारा आन्तरिक ज्योत (आत्मा रूपी ज्योत) जगाना ही अखण्ड दीप जलाकर सही मायने में नवरात्रि मनाना है। शिव परमपिता ने ही त्रिदेव (ब्रह्मा,विष्णु, शंकर) के माध्यम से उन कन्याओं को जिन्होंने परमेश्वर को जाना व पहचाना, ज्ञान, योग एवं दिव्य गुणों रूपी शक्तियों से स्वयं को अलंकारा। यही कन्याएँ अष्ट भुजाधारी (अष्ट भुजाएँ अर्थात् अन्तर्मुखता, पवित्रता, धैर्यता, सहनशीलता इत्यादि अष्ट शक्तियाँ) ब्रह्मा पुत्रियाँ कहलाईं। इन्हीं शिव-शक्तियों ने आसुरी प्रवृत्तियों से आतंकित भारतीय नर-नारियों को जगाया तथा इन बुराईयों रूपी असुरों का विनाश करने में उनकी मदद की। भक्तगण अंतर चेतना को जगाने के उपलक्ष्य में स्मृतिरूप हर वर्ष नवरात्रि में जागरण, चौकी आदि करते हैं एवं देवियों का आह्वान करके पूजन व आभार प्रगट करते हैं व शक्तियों द्वारा ज्ञान दिए जाने की यादगार के रूप में प्रथम दिन कलश स्थापना करते हैं।

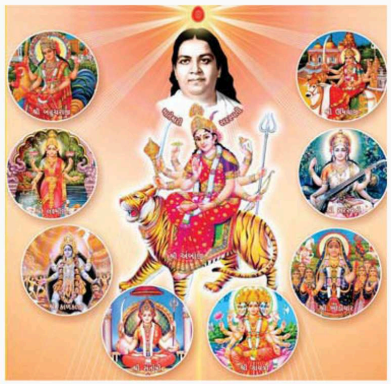

जिन कन्याओं ने परमात्मा को जाना व पहचाना, ज्ञान, योग एवं दिव्य गुणों रूपी शक्तियों से स्वयं को अलंकारा, वही अष्ट भुजाधारी (अष्ट भुजाएँ अर्थात् , पवित्रता, धैर्यता, सहनशीलता आदि अष्ट शक्तियाँ) ब्रह्मा पुत्रियाँ कहलाईं।

नवरात्रि में रात्रि में ही गायन - स्तुति क्यों?

नवरात्रि में हम अक्सर ही भजन-स्तुति, जागरण, हवन आदि रात्रि में ही करते हैं। इसलिए कभी-कभी यह जिज्ञासा होती है कि ऐसा क्यों किया जाता है। इसके पीछे एक गूढ़ ऐतिहासिक तथ्य है। 'रात्रि' शब्द का अर्थ यहाँ **शिवरात्रि** से जुड़ा हुआ है। जब कलियुग के अंत समय में अज्ञान रूपी घोर अंधकार छा गया अर्थात सारी आत्माएँ शक्ति-विहीन हो गयीं उस समय परमात्मा ज्योतिर्लिंगम शिव ने साधारण बूढ़े तन (जिन्हें प्रजापिता ब्रह्मा के नाम से शिव ने संबोधित किया) में प्रवेश किया और सभी दुखी,अशांत आत्माओं को ज्ञान सुनाया। इसलिए शिव अवतरण की उस रात्रि की याद तथा शिव-शक्तियों के सम्मान में रात में ही पूजन-वंदन करने की परम्परा नवरात्रि में प्रचलित हो गयी है।

देवियों के गुण वाचक रूपी नामों का महत्व

'दुर्गा सप्तशती' आदि में शक्तियों-देवियों के अष्टोत्तर या एक सौ आठ नाम प्रसिद्ध हैं जैसे आद्या, दुर्गा, जया,कूष्मांडा इत्यादि। ये सभी नाम लाक्षणिक अथवा गुणवाचक हैं। उन नामों से कहीं उनके पवित्र जीवन व ऊँची धारणाओं के बारे में पता लगता है तो कहीं उनके नाम काल सम्बंधित हैं या परमात्मा तथा मनुष्य से सम्बन्ध दर्शाते हैं या उनके कर्त्तव्यों का बोध कराते हैं। जैसे शक्तियों के जो सरस्वती, विमला, कूष्मांडा, विजया, तपस्विनी आदि नाम हैं, वो उनकी ज्ञान, शक्ति, योग, तपस्या और पवित्रता की शक्ति को परिचारित करते हैं। 'कुमारी' या कन्या नामों का तात्पर्य है कौमार्य (ब्रह्मचर्य) व्रत धारी व पवित्रता की धारणा रखने वाली। इसी प्रकार आदि,आद्या इत्यादि जो नाम हैं उनसे शक्तियों के आदि काल अर्थात सतयुगी दुनिया की स्थापना के समय होने की जानकारी मिलती है। 'ब्राह्मी', 'कुमारी', 'सरस्वती', 'भवानी', 'भवप्रिया' आदि नामों से ज्ञात होता है कि वे प्रजापिता ब्रह्मा की मुखवंशावली (मुख द्वारा ज्ञान सुनकर बनी हुई) ज्ञान पुत्रियाँ थी जिन्हें परमात्मा शिव ने ब्रह्मा द्वारा ज्ञान, योग व पवित्रता की शक्ति प्रदान की। इन शक्तियों ने ब्रह्मा की अलौकिक ज्ञान धारी पुत्रियाँ बनने पर अन्य मनुष्यों को भी परमपिता शिव का ज्ञान दिया। ज्ञान द्वारा उनके आसुरी लक्षणों का अंत कर उनकी आत्मा को शांत व शीतल किया। इसी वजह से उनके **शीतला, दुर्गा, भीमा, चामुण्डा** आदि कर्तव्य वाचक नाम प्रसिद्ध हैं। प्रजापिता या जगतपिता ब्रह्मा की अलौकिक पुत्री 'सरस्वती' को 'अम्बा' 'जगदम्बा' भी कहा जाता है क्योंकि उन्होंने ईश्वरीय ज्ञान द्वारा मानव आत्माओं को अंधकारमय जीवन से मुक्त कर जीवन सुखदायी एवं खुशमय बना दिया। परंतु भक्त लोग आज देवियों के गुणात्मक एवं कर्तव्य वाचक स्वरूपों को भूल केवल सांसारिक-भौतिक विषय वस्तुओं को प्राप्त करने की लालसा रखते हैं। जिस कारण मनुष्य विकारों रूपी असुरों से आतंकित जीवन जीने पर मजबूर हैं।

नवरात्रि और दशहरे में संबंध

आश्विन मास नवरात्रि के दसवें दिन दशहरा या विजय-दशमी मनाने का चलन भी अति प्राचीन है। रामायण के प्रसंगों के अनुसार इस दिन भगवान राम ने लंकापति रावण का वध कर अपनी पत्नि सीता को बंधनमुक्त किया था तथा लंका को भी रावण के अत्याचारों से आज़ादी दी थी। इसलिए बुराई 'रावण' पर अच्छाई 'राम' की जीत की खुशी में दशहरा मनाया जाता है। तब से हर वर्ष हम सभी दस मुख वाले रावण के पुतले को जलाते आ रहे हैं। रावण कोई दस मुख वाला मनुष्य नहीं था जिसका राम ने वध किया बल्कि वह माया रूपी उन दस विकारों का प्रतीक है जो इस समय सभी आत्माओं को दु:ख देकर रुला रहे हैं। काम, क्रोध, लोभ, मोह,अहंकार, द्वेष, ईर्ष्या, आलस्य, नफरत, छल आदि दस विकार माया के वह रूप हैं जो मनुष्य को देवता से असुर बनाते हैं। इस महाबली माया को केवल एक ज्योतिर्लिंगम स्वरूप शिव पिता ही ज्ञान दीप प्रज्जवलित कर हरा सकते हैं। इसलिए परमात्मा का एक गुण वाचक नाम 'हरि,'हरा' या राम है। वास्तव में विकारों रूपी रावण का ज्ञान अस्त्रों से परमात्मा राम आकर सर्वनाश करते हैं, इसी खुशी में दशहरा पर्व मनाया जाता है। शिव बाबा यह कार्य शिव-शक्तियों की मदद से संपन्न करते हैं इसलिए नवरात्रि समाप्ति के अगले दिन ही विजय दशमी मनाई जाती है। जो विकारों रूपी माया पर अच्छाई की जीत का द्योतक है। ब्रह्मापुत्रियों या शक्तियों से दिव्य गुणों मधुरता, सरलता, धैर्यता, पवित्रता आदि लेने के बजाय आज मनुष्य द्वारा केवल प्रतिकात्मक रूप में मूर्तियों की स्थापना करना, सजाना, प्रतिदिन भोग लगाना, पूजन-वंदन करना तथा नवरात्रि के अंत में इनका विसर्जन कर देना कहाँ तक तर्क संगत और कल्याणकारी है। जरूरत है कि हम अपने जीवन को ऐसा श्रेष्ठ व सरल बनाएं तथा वह सब गुण जो शक्तियों से माँगते ही आए हैं उन्हें अपनाएं और गंदी आदतों, विकर्मों आदि को छोड़ दें तभी नवरात्रि व विजय दशमी जैसे पर्व हमारी जिन्दगी में उल्लास, उमंग, खुशी, संपन्नता की सच्ची अलख जगा पाएंगे। -ब्र.कु.जगदीशचन्द्र हसीजा

माउण्टआबू-ग्लोबल अस्पताल। राजस्थान स्वास्थ्य विभाग के पूर्व निदेशक डॉ.ज्ञान प्रकाश को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात डॉ.ज्योति, ब्र.कु.महेन्द्र, ब्र.कु.संजीवनी तथा ब्र.कु.डॉ.हिना।

आगरा -कमला नगर। महापौर इन्द्रजीत आर्य को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.विमला तथा ब्र.कु.विजया।

भावनगर। सांसद विभावरी देव को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.तृप्ति।

बुलंद शहर। डीएम जी.एस.प्रियदर्शी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.रचना।

कूच बेहर (पश्चिम बंगाल)। बिरेन कुन्दु तथा रेबा कुन्दु को आत्म-स्मृति का तिलक देते हुए ब्र.कु.सम्पा।

दिल्ली-महरौली। उद्योगपति चौधरी कँवर सिंह तंवर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.अनिता।

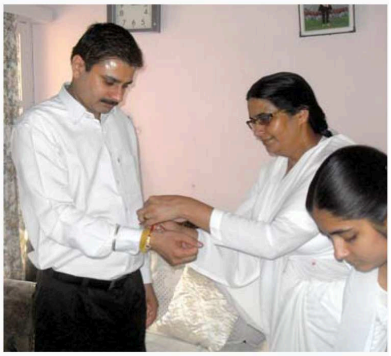

देहरा। एस.डी.एम. विनय कुमार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.कमलेश। साथ हैं ब्र.कु.सुमिता।